OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:17 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 02 अप्रैल -II-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

परमात्म संदेशवाहक का अव्यक्तारोण

"कुछ भी हो जाये, खुशी न जाये... का पर्याय बनकर, सभी के हृदय में उतरकर, सर्व सुखकारी, निर्संकल्पी, गम्भीर मुद्रा के साथ सबके मन को मोहने वाली दादी हृदयमोहिनी, उस चर्मोत्कर्ष पर चढ़ीं कि परमात्मा को शिरोधार्य कर सबको उनके सम्मुख लाया। सुखदेव बन सर्व सुखकारी बनाया। दिलाराम परमात्मा की दिलरुबा, दशकों से लाखों आत्माओं को परमात्म-मिलन कराने वाली, उनके महावाक्यों को हुबहु सबके सामने रखने वाली, ऐसी निर्संकल्प आत्मा को सम्पूर्ण विश्व सहित सभी ब्रह्मावत्सों का दिल की गहराइयों से नवीन समाज के नवाचार हेतु अव्यक्तारोहण की शत्-शत् स्मरणांजलि।"

Reverend Dadi Hirdaya Mohini Ji
(Chief of Brahma Kumaris)

सन् 1936-37 से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा परमात्म अवतरण के निमित्त बने। ये कार्य लगभग तैंतीस वर्षों तक चला, 18 जनवरी 1969 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए अर्थात् इस साकार देह को छोड़ अपना एक लाइट का शरीर(फरिश्ता स्वरूप) धारण किया। परमात्मा के आने की गतिविधि में बाधा न हो, इसके लिए शास्त्रगत गायन के अनुसार परमात्मा के अवतरण के दो माध्यम दिखाये जाते हैं। एक, जो शिव की सवारी नंदी के रूप में है और वहीं दूसरा (शिवलिंग की दूसरी तरफ) छोटी नंदी बैठा होता है। दुनिया में शिव की सवारी बैल दिखाते हैं, लेकिन बैल पर परमात्मा कैसे बैठेगा! तो इसे साकार रूप से समझने का अवसर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान देता है। परमात्मा किसी साकार माध्यम को अपना रथ चुनता है और उसके द्वारा ही परमात्मा का संदेश चारों तरफ जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् परमात्मा ने दादी हृदयमोहिनी(दादी गुल्ज़ार) को अपना रथ बनाया। नित्य परमात्मा के महावाक्य जो हम यहाँ सुनते हैं वो साकार माध्यम के द्वारा उच्चारण किये गये महावाक्य हैं, जिसे मुरली कहते हैं। जो पुरुषार्थ की गहराई और आने वाले नये बच्चों के लिए पालना का आधार बना। शिव बाबा ने ईश्वरीय कार्य को और आगे बढ़ाने तथा आने वाले नये जिज्ञासुओं के लिए दादी हृदयमोहिनी को अपना द्वितीय रथ चुना। आज 1969-2021 तक 51 साल पूरे हो गये। अब 11 मार्च 2021, महाशिवरात्रि के महान पर्व पर दादी ने अपने पंच तत्वों के देह का त्याग किया। 1928 में सिंध,कराची में जन्मी दादी हृदयमोहिनी ने मात्र 9 वर्ष की अल्पायु में इस ज्ञान को अपनाया और साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के सानिध्य में बहुत समय तक शिक्षा एवं पालना लेते रहे। जब 1951-52 में यज्ञ सेवा की शुरुआत हुई तो दादी हृदयमोहिनी दिल्ली में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के स्थापना के निमित्त बनीं। दिल्ली के पाण्डव भवन,करोल बाग सेवाकेन्द्र पर रह कर दादी काफी समय तक दिल्ली के मुख्य संचालिका के रूप में कार्यरत रहीं। दादी के शब्द हमेशा नपे-तुले होते। कम शब्दों में बड़ी-बड़ी बातें कह जातीं। उनके बोल में एक अथॉरिटी थी, थोड़े शब्दों में ही गुह्य रहस्यों को स्पष्ट कर देती थीं। उनका समय निरंतर परमात्मा की याद में बीतता, ऐसा हमेशा प्रतीत होता था। समय की अति पाबंद दादी सबको अपनी बातों से मंत्रमुग्ध कर देती थीं।

दादी परमपिता परमात्मा शिव बाबा की ट्रान्स मैसेंजर भी थीं और इसी श्रेष्ठ कर्त्तव्य के निमित्त ब्रह्माकुमारी संस्थान की गतिविधियों का क्रियान्वयन होता रहा। समय प्रति समय बदलते हुए परिवेश में भी दादी का रथ निरंतर परमात्म-मिलन के कार्यक्रम को कराता रहा। सारे ब्रह्मावत्स परमात्म वरदानों से वंचित न रह जायें, उसके लिए दादी बीमारी में भी सोचतीं कि मैं थोड़ी देर के लिए तो बैठ जाऊँ। जिससे कुछ पल के लिए सही लेकिन सभी का परमात्म मिलन भी हो और पालना भी मिले।

परमात्मा के हृदय को मोहने वाली दादी हृदयमोहिनी का हृदय इतना शुद्ध और पवित्र था कि जो परमात्मा के दिये गये निर्देशों को हुबहु इस यज्ञ में बताती थीं जिससे ब्रह्माकुमारी संस्थान के सर्व सेवाओं के प्लान सुचारु रूप से चलते गये और ये कार्य आगे बढ़ता गया। वे परमात्मा की शांतिदूत बनकर विश्व में शांति स्थापित करने का कार्य अथक और अविरत करती रहीं। आज पूरा विश्व दादी हृदयमोहिनी की अमूल्य सेवाओं को शिरोधार्य कर शत् शत् नमन कर रहा है। दादी ने परमात्मा के कार्य को विश्व पटल पर लाने के लिए कई देशों में भ्रमण भी किया, किंतु वे ज़्यादा भारत में ही रहीं। उनका जो ज्ञान देने का तरीका था वह सटीक एवं सहृदयी होता था जो सभी के हृदय को स्पर्श कर जाता था। जो एक बार दादी के सानिध्य में आया वो ज़िन्दगी में कभी उन्हें भूल नहीं पाया। ऐसी हृदय को छू लेने वाली दादी हृदयमोहिनी को हृदय से नमन।